इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी एवं भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित "काशी व्याख्यानमाला" विषयक त्रिदिवसीय संगोष्ठी के प्रथम व्याख्यान का संक्षिप्त विवरण

आचार्य अभिनवगुप्त की सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी तथा भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सहयोग से विश्वविद्यालय के ही अभिनव भवन, भारत अध्ययन केन्द्र में १७, १८ एवं २१ फरवरी, २०१७ को अपराह्न ३ बज से तीन विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम दिन १७ फरवरी, २०१७ के व्याख्यान का विषय "आचार्य अभिनवगुप्त और साहित्यशास्त्र" था जिसके वक्ता महामहोपाध्याय सनातन कवि प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी एवं अध्यक्ष प्रो० गयाचरण त्रिपाठी थे। कार्यक्रम का श्रीगणेश पं० पट्टाभिराम शास्त्री वेदविद्या प्रतिष्ठान के बटुकों द्वारा वेदपाठ से किया गया। विद्वान् वक्ताओं तथा अन्य महत्त्वपूर्ण अतिथियों, भारत अध्ययन केन्द्र के सेन्टेनरी प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक डा० विजयशंकर शुक्ल आदि ने दीप प्रज्ज्वलन कर भगवती सरस्वती एवं महामना मदनमोहन मालवीय के चित्र पर माल्यार्पण किया। संगीत एवं मंचकला संकाय की छात्राओं द्वारा कुलगीत का पाठ किया गया।

डॉ० विजयशंकर शुक्ल ने विद्वानों का परिचय एवं स्वागत भाषण दिया जिसमें गुरु वंदना से प्रारम्भ करते हुए क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा संचालित तीनों व्याख्या केन्द्रों पर भी प्रकाश डाला। इसी क्रम में "काशी व्याख्यानमाला" के आयोजन का सूत्रपात किया गया। यह व्याख्यान भी उसी कड़ी में है। तत्पश्चात् विद्वत्द्वय का माल्यार्पण एवं उत्तरीय प्रदान कर अभिनन्दन किया गया।

अपने वक्तव्य का शुभारम्भ करते हुए प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी ने सर्वप्रथम अपने अध्ययन काल मध्यमा से लेकर एम०ए० तक के कुछ संस्मरणों पर प्रकाश डाला। तदनन्तर साहित्यशास्त्र का आरम्भ आचार्य दण्डी से मानते हुए दक्षिण भारत में पल्लवों की राजधानी काञ्ची को दण्डी का गाँव तथा उनके द्वारा रचित ग्रन्थ *काव्यादर्श* का नामकरण *काव्यलक्षण* को उचित ठहराया। *काव्यादर्श* में 'आदर्श' शब्द के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए प्रो० द्विवेदी ने कहा कि प्राचीन राजाओं के यश की गाथा आज भी है उसका औचित्य बना रहे सम्भवत: इसीलिए आचार्य दण्डी ने 'आदर्श' शब्द जोड़ा होगा जिसमें स्वयं विद्वान् वक्ता ने संशोधन कर *काव्यादर्शलक्षण* नामकरण किया है ताकि आदर्श शब्द लुप्त न होने पाए। परन्तु वास्तविक नाम *काव्यलक्षण* ही है जिसका आनन्दवर्धन ने भी समर्थन किया है। आचार्य भामह का उल्लेख करते हुए उनके ग्रन्थ का नाम *भामहालंकार* बताया। आचार्य द्विवेदी ने बताया कि रुद्रट के विषय में कहा गया है कि उन्होंने पहेलियों और चित्रालंकारों आदि पर भी लिखा है तथा उनके अलंकारों का संकलन तीन श्रेणियों में है - वास्तवमूलक, विरोधमूलक और श्लेषमूलक। इस कवि ने दो अध्याय अलंकारों पर ऐसा लिखा है जिसमें 'ध्वनि' शब्द पर विचार करने से ध्वनि की प्रतीति होती है। "काव्यस्य आत्मा ध्वनि: इति..... " आनन्दवर्धन ने औचित्य का सिद्धांत साहित्यशास्त्र को दिया है जिसका समर्थन

क्षेमेन्द्र ने भी किया है कि- 'ध्वनि' को काव्य की आत्मा मान लीजिए। इसी प्रकार क्रमश: मम्मट एवं उनके श्लोक 'खड्गबन्ध' तथा बन्धों पर कार्योपलब्धि की दुर्लभता बताते हैं।

'साहित्यशास्त्र का आगम' विषय का प्रवर्तन करत हुए प्रो० द्विवेदी कहते हैं कि- एक वृत्ति में आनन्दवर्धन ने आगम का विरोध किया है तथा अभिनवगुप्त ने समर्थन किया है तथा ध्वनि का अन्तर्भाव तर्कविरुद्ध बताया है। काणे साहब ने इस विषय पर अग्निपुराण का काफी उल्लेख किया है। इस पुराण में साहित्यशास्त्र के ११अध्याय थे जिसको काण साहब ने प्रामाणिक नहीं माना है। अग्निपुराण में सम्भवत: अमरकोश के तथ्य प्राप्त होते हैं।

द्विवेदी जी कहते हैं कि अभिनवगुप्त का रसविचार अप्रामाणिक है एवं उत्पत्तिवादी आचार्य केवल भरतमुनि हैं क्योंकि भरतमुनि ने 'उत्पद्यते' क्रिया का छठें अध्याय में २२ बार एवं सप्तम् अध्याय में २७ बार प्रयोग करते हुए २७ बार निष्पत्ति शब्द का उत्तर 'उत्पद्य' (उत्पत्ति) कहकर दिया है। रस में अनौचित्य आ जाने पर रस रस नहीं रहता। आनन्दवर्धन ने ध्वनि के १४ भेद किये हैं और उसका उल्लेख भी नहीं किया है जबकि अभिनवगुप्त ध्वनि के 35 भेद कहते हैं। मम्मट ने इस भेद को ५१ बताया है और इन सबका उल्लेख भी चतुर्थ उल्लास में किया है। *चन्द्रालोक* के टीकाकार का नाम *गागाभट्ट* ह। मीमांसा के महान् कवि थे। इस प्रकार साहित्यशास्त्र उत्तरोत्तर विकसित होता गया। अत: साहित्य में सब स्वीकार्य है। भारतवर्ष के धर्म की रक्षा हमारा मुख्य उद्देश्य है। यही अभिनवगुप्त भी कहते हैं।   'मन्दारमलन्दचम्पूकार' का नाम श्रीकृष्ण था जिन्हांने विभावना अलंकार को ज्यादा स्पष्ट किया है। विशेषोक्ति अलंकार स्पष्ट है और रस भी अलंकार है। महिमभट्ट, कुन्तक आदि ने भी इनके मत का समर्थन किया है। साहित्यशास्त्र का आगम अग्निपुराण है जहाँ साहित्यशास्त्र के समग्र सूत्र मिलते हैं।

'आगम' शब्द के विषय में अग्निपुराण में ११, विष्णुधर्मोत्तर पुराण में ४ अध्याय उल्लिखित है।

'वाङ्मयम् काव्यम्' काव्य का लक्षण है। काव्य शब्दात्मक है। शब्द का जो अर्थ है वह उसकी आत्मा है- 'अर्थ: तस्य आत्मा' । आगम कहता है - जिसने अनुप्रास अलंकार को साधारण ढंग से भी जोड़ दिया उसने भगवान् विष्णु को प्रसन्न कर दिया और अपराविद्या से पराविद्या में प्रविष्ट हो गया। ब्रह्म से ही इसका आरम्भ होकर ब्रह्म में ही इसका पर्यवसान होता है। शब्द साधना ही ब्रह्म तक ले जा सकती है। आगम में प्रतीयमान अर्थ काव्य की आत्मा है।

'काव्यस्य आत्मा सैव अर्थ:' अभिनवगुप्त ने यहाँ आनन्दवर्धन के मत को अस्वीकार किया है।

आनन्दवर्धन - वस्तु और अलंकार दोनों जब रसरूप में परिवर्तित होते हैं तब जाकर 'ध्वनि' बनती है। अर्थ दो प्रकार का होता है- १. कविनिबद्धवक्तवसिद्ध:, २. स्वत:सम्भवीवक्तृत्वसिद्ध:।

अभिनवगुप्त - रस के ऊपर जोर देते हैं।

प्रश्न है - रस कहाँ रहता है?

उत्तर - हृदय में रहता है।

मम्मट कहते हैं - 'स्थायीभावो रस: स्मृत: । अत: काव्यं रसवत्। दण्डी का वचन रसवत् यानी रसतुल्य है।

अभिनवगुप्त की एक बड़ी विशेषता है& किसी रहस्यलोक में पहुँचा देना क्योंकि वे रहस्यवादी भी हैं। 'प्रत्यभिज्ञा' यानी पहचान। अभिनवगुप्त *परमार्थसार* में मोक्ष का लक्षण करते हैं- 'मोक्षस्य नैव किञ्चित् धामास्ति .. अज्ञान ... आत्मा स्वरूपपरमार्थता माक्ष:'। 'सुन्दरो विकल्प: काव्यम् में स्वयं कहते हैं कि विकल्प तो सुन्दर होना चाहिए। 'सौन्दर्यम् अलंकार:' में वामन् सौन्दर्य की जगह शोभा लिखते हैं। शृंगार के बाद छवि बनती है तथा उस समग्र छवि का नाम अलंकार है। अलंकार में वस्त्र बाद में नहीं पहना जाता अपितु एक साथ ही पहना जाता है। अच्युतराज के मतानुसार अलंकार और गुणों में कोई अन्तर नहीं है ।•

प्रो० द्विवेदी ने स्वरचित आगम सुनाया 'अहमागम' इसमें अहंकारो निरूपित:। 'अहम्' का अर्थ विश्व है। प्रकाश ने पहले 'अहम्' का विमर्श किया है अर्थात् अहम् तत्त्व: यत्र प्रतिपाद्यते स आगम: ... । अलम् का अर्थ अलंकार से है। इसीलिए काव्य की आत्मा अलंकार है। इसी में रस को भी लिया है तथा ध्वनि को भी अलंकार माना जाए ऐसा इस विद्वान् कवि का कथन है। इस प्रकार से प्रो० द्विवेदी न अपन व्याख्यान में आचार्य गुप्त के पूर्ववर्ती आचार्यों के महत्त्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख करते हुए साहित्यशास्त्र के प्रति अभिनवगुप्त के योगदान को अत्यन्त उल्लेखनीय बताते हुए कहा कि अभिनवगुप्त ने इसे प्रौढ़ावस्था में लाकर समापन किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो० गयाचरण त्रिपाठी ने कहा कि संस्कृत साहित्य के ऊपर पं० रेवाप्रसाद द्विवेदी से बड़ा मौलिक चिंतक अन्य कोई नहीं है क्योंकि पूर्णरूपेण भारतीय परम्परा से शास्त्रों से प्रभावित आपके क्रांतिकारी विचार बहुतों को आत्मसात् करने में समय लगता है। आपने अलम् शब्द की विस्तत व्याख्या की। 'अहम्' के अन्तर्गत समस्त विश्व आ जाता है। आपके ये सारे विचार तर्कसंगत है, अखण्डनोय है। आने वाले समय में आपके विचारों का लोग अनुगमन करेंगे। *व्यक्तिविवेक* आपका काफी पहले प्रकाशित ग्रन्थ है। साहित्यशास्त्र की परम्परा आज भी नवीन रूप में प्रकाशित हो रही है। ग्रन्थों के सिद्धांत का तुलनात्मक अध्ययन परंपरा को पुष्ट करता है।

'वाग्ब्रह्म' की परम्परा से प्रभावित होकर ही 'ध्वनिशास्त्र' विकसित हुआ। अलंकार की आपने काफी विस्तृत व्याख्या की। वह मात्र बाह्य ही नहीं है, आंतरिक भी हो सकता है। आपने अपने *साहित्यालंकार* ग्रन्थ में सब कुछ उद्धृत कर दिया है। अत: प्रोफेसर द्विवेदी जी प्रौढ़ विद्वान् आज की परम्परा में उपलब्ध नहीं है। आने वाले समय में आप स्मरणीय होंगे, इत्यादि कथनों के साथ उन्हें धन्यवाद देते हुए अपने वाणी को विराम दिये।

इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से प्रो० नवजीवन रस्तोगी, प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी, प्रो० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी, प्रो० मनुदेव भट्टाचार्य, प्रो० जयशंकरलाल त्रिपाठी, प्रो० राकेश उपाध्याय, डा० एस०पी० पाण्डेय तथा विश्वविद्यालय के अन्य प्रतिष्ठित विद्वान् एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

धन्यवाद ज्ञापन प्रो० युगलकिशोर मिश्र जी ने एवं कार्यक्रम का संचालन भारत अध्ययन केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदाशिव द्विवेदी ने किया।

"काशी व्याख्यानमाला " के अन्तर्गत त्रिविदवीय संगोष्ठी के द्वितीय व्याख्यान का संक्षिप्त विवरण

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एवं भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'काशी व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत आयोजित त्रिविदवीय व्याख्यान क्रम में दूसरे दिन अर्थात् १८-2-१७ के व्याख्यान का विषय "**आचार्य अभिनवगुप्त और त्रिकदर्शन**" था जिसके वक्ता थे महामहोपाध्याय प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी एवं अध्यक्ष थे प्रो० गयाचरण त्रिपाठी। कार्यक्रम का शुभारम्भ पं० पट्टाभिराम वेदमीमांसा अनुसन्धान केन्द्र के छात्रों द्वारा उच्चरित वैदिक मंत्रों के साथ माँ सरस्वती एवं पं० मदनमोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संगीत एवं मंचकला संकाय की छात्राओं ने कुलगीत का गायन प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक डा० विजयशंकर शुक्ल ने स्वागत भाषण तथा विद्वान् वक्ता एवं अध्यक्ष का परिचय प्रदान किया।

अपने वक्तव्य में प्रो०त्रिपाठी ने कहा कि आचार्य अभिनवगुप्त की सहस्राब्दी मनायी जा रही है। दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आचार्य अभिनवगुप्त का उदय होता है। अभिनवगप्त भारतीय दर्शन के दूसरे शिखर हैं। पहले शिखर का निर्माण आचार्य शंकर ने किया था। अत: आचार्य अभिनवगुप्त विलक्षण व्यक्तित्व हैं। वे महान् दार्शनिक, योगी, चिंतक, तांत्रिक साधक तथा तंत्र की कोई ऐसी पद्धति अब तक नहीं बन पाई है यो वो हैं। उनके पास विद्यार्जन हेतु देश के सुदूर भागों से लोग आते थे। वै जैसे विद्वान् थे वैसे ही आचार्य थे। उन्होने अपने स्वयं के जीवन का वर्णन नहीं किया है। अत: मैं इस देश की महान् विभूतियों में एक अप्रतिम व्यक्तित्व का स्मरण कर रहा हूँ। उन्होंने गायत्री मंत्र की व्याख्या की है। तंत्रालोक की रचना उनके द्वारा सम्पूर्ण शास्त्र को एक पद्धति में बांधने का उत्कृष्ट प्रयास है। आचार्य गुप्त ने समूची वैदिक परम्परा का गहन प्रतिपादन कर उसे परवर्ती युग के लिए सुरक्षित किया है। करण, अंगहार इत्यादि विषयों पर प्रकाश डालते हुए प्रो० त्रिपाठी आचार्य भर्तृहरि के विषय में कहते हैं कि आगम के प्राधान्य को प्रतिष्ठित करने वाले व्यक्ति का नाम है भर्तृहरि। विशुद्धि का अर्थ अद्वैत से है।

मुण्डक एवं माण्डूक्य उपनिषदों में जिसे कहा गया है वह 'प्रणव' है। एक पदात्मक आगम है। जहाँ वेदान्त, वेदाङ्ग और आगम एक साथ हो जाते हैं वह है भर्तृहरि तथा भर्तृहरि का यह चिंतन महायान धर्म को बाध्य करता है कि वे आगम की तरफ आयें।

तंत्रालोक- "प्रमेयसिद्धि: प्रमाणाद्धि:" तथा "प्रसिद्धि: आगमो लोके " --। आगम अन्त: प्रज्ञा है। आगम प्रतिभा है। पुन: वह प्रसिद्धि है। वह अवगीता है। वह अनिन्दित प्रसिद्धि है। वागात्मक धारा का अर्थ है आगम। तन्त्रालोक की व्याख्या अत्यन्त विस्तृत है। आगम तत्त्वमीमासा है, प्रमाणमीमांसा है, समाजदर्शन है। आगम अविच्छिन्न परम्परा है। यह व्याकरण स्मृति भी है। वेद की दृष्टि से इतिहास है। इतिहास की दृष्टि से पुराण है। योग की दृष्टि से ऋतम्भरा है। तन्त्र की दृष्टि से अन्त:प्रज्ञा है। इसलिए यह आगम है। अविच्छिन्न परम्परा है। उसके कर्तृत्व को हम नहीं कह सकते। वह अपौरुषेय है।

आगम का मार्ग है जो इच्छा करते हो वही जानते हो। इच्छति, जानाति, करोति अर्थात् इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति तथा क्रियाशक्ति।

आगम के बाद स्पन्दशास्त्र आता है यानी क्रमशास्त्र जो कि शक्तिपारम्य है। तत्त्व शक्तिपारम्य है। शिव-शक्ति में तादात्म्य है, नानात्व नहीं है।

आचार्य अभिनवगुप्त की सत्कारणवाद की व्याख्या भारतीय दर्शन के लिए वरदान है। आचार्य गुप्त को षड्मतस्थापक कहा गया है। ज्ञानाधिकार के अन्त में अभिनवगुप्त कहते हैं कि अगर स्मृति नहीं है तो सब कुछ विस्मृत हो जाता है। “There is no consciousness without self-conscious”.

इस प्रकार आगम के बाद स्पन्द तथा इसके पश्चात् प्रत्यभिज्ञा (पहचान) आती है। अन्ततः परमशिव। इसीलिए शंकराचार्य के बाद सम्पूर्ण भारत में आचार्य अभिनवगुप्त स्मरणीय हैं। इस प्रकार से प्रो० त्रिपाठी ने इन आचार्यों के मध्य दार्शनिक संवाद का प्रतिपादन किया।

प्राच्य एवं प्रतीचि उभयविध विद्याओं में निष्णात प्रो० गयाचरण त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में वाक्यपदीय की कारिका “विवर्तते अर्थभावेन प्रक्रिया जगतो परम् ” से प्रारम्भ करते हुए कहा कि इतने वैदुष्यपूर्ण भाषण के पश्चात् अध्यक्षीय भाषण का कोई औचित्य नहीं बनता। आपने वाक्यपदीय, भाषादर्शन, वाग्ब्रह्म, आगम, निगम इत्यादि सब पर प्रकाश डाला जबकि आपका विषय था “आचार्य अभिनवगुप्त और त्रिकदर्शन”।

आगम अर्थात् जो आगत है। गुरुओं की परम्परा से प्राप्त हो वह आगम है एवं निगम वह है जो स्वयं से उपार्जित हो। आत्मसात् हो। कश्मीर शैवदर्शन कश्मीर से लेकर केरल, तमिलनाडु, इण्डोनेशिया और कम्बोडिया तक विस्तृत है। भोग और मोक्ष को आपने प्राप्य कहा। आनुषंगिक और प्रासंगिक रूप से आपने इन सभी विषयों पर प्रकाश डाला। इससे शिवदर्शन के सिद्धांतों की गम्भीरता परिलक्षित होती है।

इस सभागार में आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रो० चूडामणि, प्रो० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी, प्रो० मनुदेव भट्टाचार्य, प्रो० कृष्णकान्त शर्मा, प्रो० जयशंकरलाल त्रिपाठी, प्रो० दीप्ति त्रिपाठी, प्रो० राकेश उपाध्याय, डॉ० शीतला प्रसाद पाण्डेय आदि अनेक विद्वान् उपस्थित थे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन भारत अध्ययन केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदाशिव कुमार द्विवेदी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो० राकेश उपाध्याय ने किया।

"काशी व्याख्यानमाला" के अन्तर्गत त्रिविदवीय संगोष्ठी के तृतीय व्याख्यान का संक्षिप्त विवरण

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एवं भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'काशी व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत आयोजित त्रिदिवसोय व्याख्यान के अन्तर्गत आयोजित व्याख्यान शृंखला का तृतीय व्याख्यान दिनांक २१.२.२०१७ करे भारत अध्ययन केन्द के सभागार में आयोजित हुआ।

व्याख्यान का विषय था- "**भर्तृहरि का दर्शन और उस पर हुए आधुनिक कार्य**" तथा वक्ता थे दिल्ली विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफेसर मिथिलेश चतुर्वेदी। सत्र की अध्यक्षता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी ने की। विशिष्ट विद्वान् सारस्वत अतिथि के रूप में आचार्य रामयत्न शुक्ल जी भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ पट्टाभिराम शास्त्री वेदमीमांसा अनुसंधान केन्द्र के छात्रों द्वारा वेद-पाठ एवं माँ सरस्वती एवं पं० मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तदुपरान्त इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के निदेशक डा० विजयशंकर शुक्ल ने स्वागत भाषण तथा विद्वान् वक्ता एवं अध्यक्ष का परिचय दिया। साथ ही तीनों विद्वानों का माल्यार्पण एवं अंगवस्त्रम् प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रो० मिथिलेश चतुर्वेदी जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'वाक्यपदीय' पर चर्चा इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी में लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व प्रो० विद्यानिवास मिश्र, प्रो० रामप्रसाद त्रिपाठी एवं प्रो० नरेन्दनाथ पाण्डेय सदृश विद्वानों के द्वारा पारम्भ की गयी थी। वाक्यपदीय के अध्ययन का प्रारम्भ पिछली सदी में कैसे हुआ? भर्तृहरि कवि भी थे। अत: वाक्यपदीय के रचयिता और कवि एक ही हैं या अलग? इस क्रम में प्रो० चतुर्वेदी ने कहा कि-

'अनादिनिधनं ब्रह्म' से शब्द को ब्रह्म कहते हैं। वृषभदेव ब्रह्म की दो व्याख्या करते हैं- १. सम्यक अवस्था, २. विकारावस्था।

शब्दतत्त्व नामरूपात्मक जगत् पदार्थ का कारण है। अत: ब्रह्म शब्दस्वरूप है। कारण में कार्य का समन्वय है। भर्तृहरि अविद्या को ब्रह्म से भिन्न नहीं मानते।

गौरीनाथ शास्त्री, भर्तृहरि के दर्शन की कुछ आधारभूत सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि काल और ब्रह्म में वास्तविक रूप से कोई भेद नहीं है। वास्तविक ब्रह्म में जो विभाव है वह असत्य है। अत: केवल विभावों की असत्यता है, जगत् की असत्यता भर्तृहरि नहीं मानते।

भर्तृहरि ने स्फोटवाद के सिद्धान्त को विकसित किया है। एस०डी० जोशी के मतानुसार वर्ण का स्थायीरूप ही स्फोट है। *सर्वदर्शनसंग्रह* में स्फोट वर्णों से भिन्न है।

<u>आचार्य मण्डन मिश्र के अनुसार</u> - 'पदवाक्य एव स्फोट:' । अत: स्फोट कोई अतीन्द्रियसत्ता न होकर एक प्रत्यक्ष सत्ता है। स्फोट् - दो हैं- बाह्य एवं आभ्यन्तर । बाह्य को एक तरह से पश्यन्ती के स्तर की सत्ता कहते हैं। आभ्यन्तर सत्ता के रूप में चैतन्यरूप है। शब्द का अर्थ वही है जब श्रोता उसे ग्रहण करता है। भर्तृहरि के मत में अर्थ प्रतिभास्वरूप है।

प्रोफेसर चतुर्वेदी ने भर्तृहरि के दर्शन पर विभिन्न विद्वानों - हेलाराज, शंकराचार्य, पतंजलि, मण्डन मिश्र सदृश इन प्राचीन विचारकों के अतिरिक्त आधुनिक विचारकों जैसे गौरीनाथ शास्त्री, एस०पी० जोशी आदि अनेक विद्वानों के मतों को प्रस्तुत किया।

भूषणकार का उल्लेख करते हुए कहते है कि भूषणकार ने भर्तृहरि को व्याकरण का चतुर्थ मुनि कहा है। भर्तृहरि परिणाम के तात्त्विक परिवर्तन को आवश्यक न मानते हुए परमतत्त्व को शब्दार्थ मानते हैं जिससे आचार्य शंकर सहमत नहीं हैं। प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी जी के मतों को स्मरण करते हुए प्रो० चतुर्वेदी ने कहा कि भर्तृहरि की अवधारणा में जगत् असत्य नहीं है क्योंकि हम विभागों को असत्य मान सकते हैं, किन्तु जगत् को नहीं। इस तरह शब्द, अर्थ, नाद, स्फोट इत्यादि भाषाविषयक तत्त्वों पर अन्य आचार्यों के मतानुसार सूक्ष्म प्रकाश डाला। शंकराचार्य के ब्रह्मवाद तथा भर्तृहरि के शब्दब्रह्मवाद को समान बताया। 'स्फोट' की व्याख्या करते हुए इसकी विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि से तुलनात्मक प्रस्तुति की। भर्तृहरि को विश्व भाषादर्शन का प्रतिपादक आचार्य स्वीकार किया। वाक्यपदीय पर अम्बाकर्त्ती का भी उल्लेख करते हुए अन्त में प्रो० चतुर्वेदी यह कहते हैं कि भर्तृहरि का दर्शन बाहर के दर्शों को भी आकर्षित करता है। सम्पूर्ण विश्व में ऐसा सूक्ष्म अध्ययन किसी आचार्य ने नहीं किया है।

व्याकरणशास्त्र के विशिष्ट विद्वान् प्रो० रामयत्न शुक्ल ने परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी की विवेचना करते हुए भर्तृहरि को बह्मवादी कहना ही ज्यादा उचित ठहराया।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग एवं संकायाध्यक्ष तथा प्रकाण्ड वैय्याकरण आचार्य भूतपूर्व प्रो० जयशंकर लाल त्रिपाठी ने कहा कि- भर्तृहरि के सामने एक बड़ा मानसिक क्लेश था कि पतंजलि के सामने जो संग्रह नामक ग्रन्थ था जो पाणिनि के समकालिक है जिसमें १ लाख श्लोक थे, जो लुप्तप्राय हो गया था। महाभाष्य जो बचा था उस पर नैयायिकों का कुठाराघात हुआ। जिससे वाक्यपदीय के प्रारम्भ में ही नैयायिकों की आलोचना हुई। जैसे कि वाक्यपदीयकार ने वाक्यपदीय के प्रथम काण्ड में ही सर्वाधिक प्रहार अनुमान पर ही किया है, इसमें भर्तृहरि का क्षोभ हो परिलक्षित होता है जिसका कारण उस समय के विद्वानों के द्वारा व्याकरणशास्त्र के संक्षिप्त अध्ययन प्रणाली के कारण संग्रह नामक ग्रन्थ का लुप्त होना ही था। भर्तृहरि ने व्याकरणदर्शन के सभी महत्त्वपूर्ण पदार्थों पर पद्यों में अपना विचार प्रस्तुत किया है जबकि उस समय गद्यात्मक शैली प्रचलित थी। वाक्यपदीय के ब्रह्म, स्फोट विषयों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वाक्यपदीयकार ने व्याकरणशास्त्रसम्मत स्फोट इत्यादि विषयों को स्पष्ट प्रस्तुत नहीं किया है। जबकि व्याकरणशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्ययापक था। "महान् शब्दस्य प्रयोग विषय:" शब्द का क्षेत्र तो इतना विस्तृत है कि ऐसा कोई विषय नहीं है जिसका व्याकराशास्त्र में उल्लेख न हो सके। पर व्याकरणशास्त्र का पूरा उल्लेख न करते हुए भर्तृहरि ने सिर्फ मतोल्लेख लिख दिया है।

नागेश ने 'परा'को स्वीकार किया है क्योंकि इनके समय तक त्रिक् (शैवागम) उन्नति पर था-"त्रय: वाच: परम पदम्" पर भर्तृहरि 'पश्यन्ती' तक ही व्याकरणशास्त्र को लेते हैं। परा से सम्बन्ध तो ओऽम् का होता है। अत: शब्द के लिए

ध्वनि, शब्द, शब्दब्रह्म और स्फाट का प्रयोग हुआ है। स्फोट का प्रयोग अभी भी विवाद का विषय बना हुआ है और विवाद होना भी चाहिए अन्यथा चर्चायें कैसे होंगी? संपूर्ण वाक्यपदीय पर एक हिन्दी व्याख्या होनी चाहिए ताकि व्याकरणशास्त्र कि अध्ययन की धारा प्रक्रिया चिंतन जो लुप्तप्राय है अनवरत चलती रहे। अत: भर्तृहरि विवर्तवादी हैं। मूलभूत आन्तर स्फोट ओऽम् है।

इस सारस्वत संगोष्ठी में प्रो० मनुदेव भट्टाचार्य, डा० एस०पी० पाण्डेय, प्रो० कृष्ण मोहन पाण्डेय, प्रो० कृष्णकान्त शर्मा, प्रो० कमला पाण्डेय, प्रो०चन्द्रभूषण झा, प्रो० बालशास्त्री, प्रो० शांतिस्वरूप सिन्हा आदि अनेक गणमान्य विद्वान् तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अनेक छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

सम्पूर्ण आयोजन का संचालन भारत अध्ययन केन्द्र के सेन्टेनरी चेयर प्रो० राकेश उपाध्याय ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो० सदाशिव कुमार द्विवेदी ने किया।